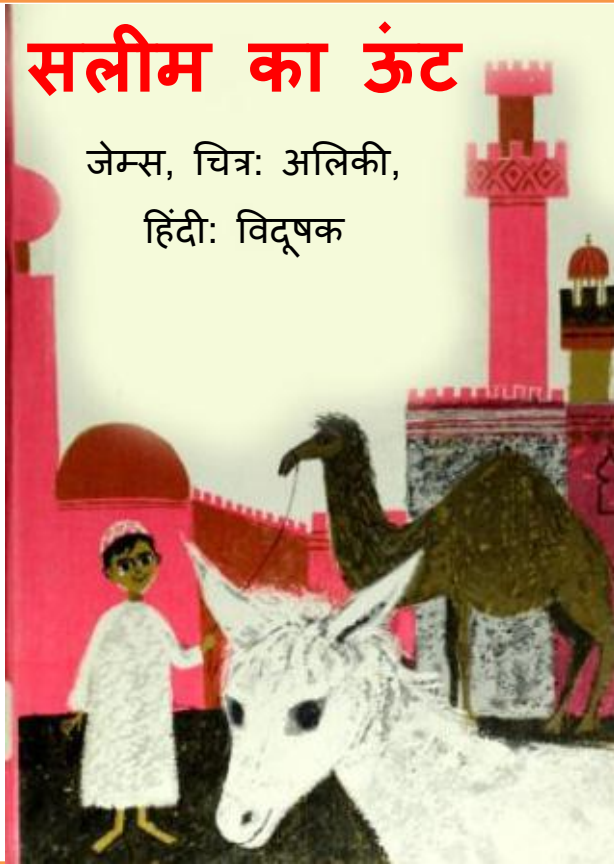


सलीम का ऊंट

जेम्स, चित्र: अलिकी,
हिंदी: विदूषक





सलीम एक छोटा लड़का था। वो मोरक्को में अपने पिता और माँ के साथ एक फार्म पर रहता था। सलीम को जानवरों से बहुत प्यार था। उसका एक पालतू गधा था - मिस्टर मूनलाइट। एक दिन बाज़ार में एक निर्दयी ऊँट-व्यापारी को, एक ऊँट बहुत परेशान कर रहा था। कोई भी उस व्यापारी की सहायता के लिए आगे नहीं आया। तब सलीम दौड़ा हुआ गया और उसने उस खतरनाक ऊँट के गले को पकड़ा। फिर सलीम ने ऊँट के कान में प्यार से कुछ कहा जिससे ऊँट एकदम शांत हो गया। ऊँट-व्यापारी मुस्तफा ने, उस खतरनाक ऊँट से पिंड छुड़ाने के लिए उसे सलीम को दे दिया। सलीम ने उस ऊँट - ओमर को, धैर्य और प्रेम से अपने काबू में किया। बाद में उसने अपने गधे मिस्टर मूनलाइट और ऊँट ओमर को, खेत जोतने के लिए तैयार किया। उससे सलीम का परिवार बहुत खुश हुआ। अब सलीम के पिता को खेत जोतने के लिए मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। आप आज भी मोरक्को में, गधों और ऊँटों को साथ मिलकर, खेत जोतते हुए देख सकते हैं।

सलीम का ऊँट

जेम्स, चित्र: अलिकी,

हिंदी: विदूषक





एक अरबी लड़का था. उसका नाम सलीम था. वो दस साल का था. वो मोरक्को में एक मिट्टी के घर में अपने अब्बा, अम्मी और मिस्टर मूनलाइट के साथ रहता था. मिस्टर मूनलाइट एक बहुत दोस्ताना किस्म का गधा था. उसकी नाक हमेशा गीली रहती थी. वो हल्के पीले रंग एकदम चांदनी के रंग का था.

एक दिन सलीम ने जौ का खेत जोतने में, अपने अब्बा की मदद की. उसने हल के हैंडल को पकड़ा और उसे मिट्टी में जोर से दबाया. सलीम के अब्बा ने हल की रस्सी को खींचा. इस कड़ी मेहनत से सलीम के अब्बा बहुत जल्दी थक गए. जब दोनों आराम करने के लिए बैठे तो सलीम ने अब्बा से कहा, “अगर आपकी बजाए मिस्टर मूनलाइट – हमारा गधा हल को खींचे, तो उससे खेत की जुताई का काम बहुत आसान हो जायेगा?”

पिता ने मुस्कराते हुए कहा, “ठीक है सलीम. पर गधे चीज़ों को खींचते नहीं हैं. वो अपनी पीठ पर बस भार ढोते हैं.”

पर सलीम को इस बात का पूरा यकीन था इस अगर उसने मिस्टर मूनलाइट से कहा तो उसका गधा हल जरूर खींचेगा.



उसके बाद सलीम दौड़ा-दौड़ा घर गया और वो खेत जोतने के लिए गधे को लेकर आया। सलीम के अब्बा ने हल खींचने वाली रस्सी मिस्टर मूनलाइट को बाँधी। फिर अब्बा ने हल के हैंडल को पकड़ कर ज़मीन में दबाया और सलीम ने अपने सफ़ेद गधे से कहा, “चलो मिस्टर मूनलाइट, खींचो!” मिस्टर मूनलाइट ने अपनी भरपूर कोशिश की। उसने अपना पूरा दम लगाकर खींचा। हल कभी ज़मीन पर फिसला पर कभी एकदम रुक गया और बिल्कुल आगे नहीं बढ़ा।



हल से बहुत छिछली जुताई हुई। इतनी छिछली जुताई में जौ के बीज बोना संभव नहीं था। अंत में सलीम के अब्बा ने कहा, “देखो सलीम, वो एक अच्छा गधा है, पर उसमें हल खींचने की ताकत नहीं है। तुम उसे घर वापिस ले जाओ.”



अगले दिन सलीम और उसके अब्बा को किसी काम से बाज़ार जाना था. वे दोनों मिस्टर मूनलाइट पर बैठकर बाज़ार के लिए रवाना हुए - सलीम आगे बैठा और अब्बा पीछे. गाँव के पास पहुँचते ही उन्हें ऊँट-बाज़ार में से ज़ोरदार और उत्तेजित आवाजें सुनाई दीं - ऊँची आवाजें, चीखने-चिल्लाने और कराहने की आवाजें. सलीम और उसके अब्बा मिस्टर मूनलाइट से कूदे और चीखने-चिल्लाने का कारण खोजने पहुंचे. तब तक वहां पर अच्छी खासी भीड़ जमा हो चुकी थी.





ऊंट-व्यापारी मुस्तफा को एक खतरनाक
ऊंट बहुत तंग कर रहा था. मुस्तफा के हाथ
में एक चमड़े का चाबुक था जिससे वो ऊंट
को मार रहा था. ऊंट अपने दोनों आगे के पैर
ऊपर करके अपनी लम्बी गर्दन और लम्बे
पीले दांत मालिक को दिखा रहा था. ऊंट ने
अपने मालिक की आँखों में थूकने की भी
कोशिश की. जब ऊंट गुस्से में होते हैं तो
वे अक्सर ऐसा करते हैं.



“ज़रा उस बिचारे ऊँट को देखो,”
सलीम ने अपने अब्बा से कहा.
“मुस्तफा उसे मारने की कोशिश कर
रहा है!”

“उस बेचारे मालिक मुस्तफा को भी
देखो!” अब्बा ने उत्तेजित होते हुए
कहा. “ऊँट अपने मालिक को मारने
की कोशिश कर रहा है.”

बस तभी ऊँट अपने मालिक की
तरफ लपका और उसने मालिक के
कंधे को काटने की कोशिश की.
मुस्तफा डर के मारे चिल्लाया और
पीछे मुड़कर भागा. पर ऊँट ने उसका
पीछा किया. ऊँट लगातार फुंकारता
रहा और मालिक की ओर दुलत्तियाँ
चलाता रहा.

“बचाओ!” मुस्तफा चिल्लाया. फिर वो
गोल-गोल एक खरगोश जैसे दौड़ने
लगा. “यह ऊँट मुझे मार डालेगा!”



पर भीड़ उसकी बात सुनकर बस हंसी. कोई भी उसकी सहायता के लिए आगे नहीं आया. सलीम को भी मुस्तफा की कोई खास फ़िक्र नहीं थी. सबको पता था की मुस्तफा अपने ऊंटों के साथ बहुत बर्बरता से पेश आता था.



पर सलीम को जानवरों से अथाह प्रेम था – खास कर बदमिजाज़ और गुस्सैल जानवरों से. वो ऐसे जानवरों को काबू करके उनसे दोस्ती बनाना जानता था. सलीम नहीं चाहता था की ऊँट की और पिटाई लगे. इसलिए वो मुस्तफा की तरफ देखकर जोर से चिल्लाया. “मैं तुम्हारी मदद करूंगा!” उसके बाद सलीम उस खतरनाक ऊँट के पास दौड़ा हुआ गया. उसने यह सोचा तक नहीं की वो खतरनाक ऊँट उसे मारकर खत्म कर सकता था. या फिर अपने नुकीले दांतों से वो उसके टुकड़े-टुकड़े कर सकता था. उसकी बजाए सलीम ने जल्दी से ऊँट की रस्सी को पकड़ा और उसे कसकर झटका दिया. उससे ऊँट तुरंत रुक गया. उसके बाद सलीम ने ऊँट के मुलायम गले को प्यार से थपथपाया. फिर उसने ऊँट के सिर को नीचे खींचा और उसके कान में कुछ कहा. उन शब्दों से ऊँट तुरंत शांत हो गया.





सलीम ने खतरनाक ऊँट को शांत किया, यह देखकर मुस्तफा ने भागना बंद किया. फिर मुस्तफा ने सलीम से कहा, “अगर आज तुम न होते तो मैं अभी जिंदा नहीं बचता. उस खतरनाक ऊँट – ओमर ने मुझे ज़रूर मार डाला होता! वो पूरे अफ्रीका में सबसे खतरनाक ऊँट है. उस ऊँट को मुझसे कोई नहीं खरीदेगा. कोई भी मुझसे वो ऊँट नहीं लेगा!”

“क्या आप उस ऊँट को मुझे देंगे?” सलीम ने उत्सुकता से पूछा. “मुझे वो ऊँट बहुत पसंद है.”



मुस्तफा ने कहा, “ले लो! अब से वो ऊँट तुम्हारा है!” यह सुनकर सलीम बहुत खुश हुआ.

“आपका बहुत शुक्रिया, मुस्तफा साहिब!” सलीम ने कहा. उसके बाद सलीम और उसके अब्बा ऊँट ओमर को अपने घर ले गए.

मिस्टर मूनलाइट आगे चले और उस पर सलीम के अब्बा बैठे.

ऊँट, मिस्टर मूनलाइट के पीछे-पीछे चला. ऊँट एक रस्सी से बंधा था जिसे सलीम के अब्बा ने अपने हाथ में पकड़ कर रखा. ऊँट के ऊपर सलीम बैठा और फिर हिंचकोले खाता हुआ वो घर की ओर चला. आज सलीम बहुत खुश था.

अगले दिन सुबह सलीम और उसके अब्बा खेत में गए. अचानक सलीम के दिमाग में एक नया विचार आया.

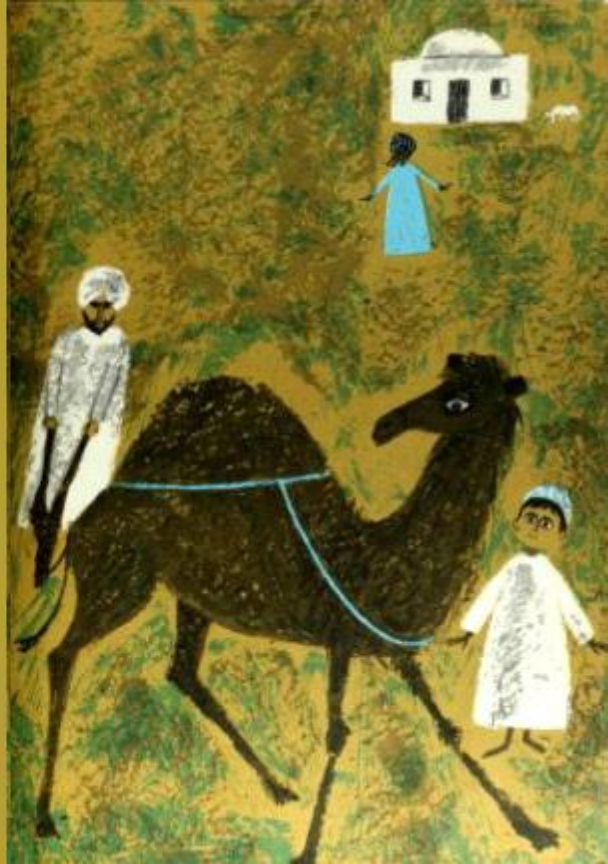
“अब्बा!” उसने उत्साहित होकर कहा. अब ओमर हमारे खेत को जोत सकता है. वो बड़ा और ताकतवर है.”

पर उसके अब्बा को यह ठीक नहीं लगा. उन्होंने कहा, “ऊँट माल ढोने के लिए होता है. और उसके कूबड़ के दोनों ओर बोरे लदे होते हैं. ऊँट, हल खींचने के लिए नहीं होता है.”

पर सलीम को पक्की तरह पता था कि उसके कहने से ओमर हल को ज़रूर खींचेगा.

फिर उन्होंने ऊँट से रस्सी बाँधी जिससे वो हल को खींच सके.

“खींचो! ओमर खींचो!” सलीम ने उत्सुक होकर कहा. पहले तो ओमर ने इंकार किया. उसने अपनी भयावय आँखों को गोल-गोल घुमाया. उसने अपने दोनों चौड़े पैरों को ज़मीन में धंसाया और आगे बढ़ने से इंकार किया. ऊँट ने पीछे की तरफ गर्दन घुमाई और घुराया.



पर अंत में सलीम ने उसके कान में कुछ कहा. उससे ऊँट शांत हुआ. उसके बाद ओमर ने हल खींचना शुरू किया. पहले धीमे-धीमे फिर उसने तेज़ी से हल खींचा.

ऊँट के पीछे-पीछे हल, ज़मीन को जोतता हुआ चला. सलीम ने पीछे मुड़कर देखा. ज़मीन में जुताई के बाद एक गहरी नाली बन रही थी.

“अब्बा, देखो! ओमर जुताई कर रहा है.” सलीम चिल्लाया.

धीरे-धीरे वो पूरे खेत की लम्बाई में गए - एक छोर से दूसरे तक.

फिर वो वापिस आये, पहली नाली के पास दूसरी नाली बनाने के लिए.

शुरुआत की जगह पर वापिस आने के बाद सलीम के अब्बा ने कहा, “चलो काफी हो गया. अब हम कुछ समय सुस्तारेंगे.”

फिर उन्होंने खेत को ध्यान से देखा, खासकर उन दोनों नालियों को जिसे ओमर ने अभी जोता था. उन्हें तुरंत कुछ गलती का पता चला. नालियाँ सीधी नहीं थीं, बल्कि टेढ़ी थीं - एक बल खाते सांप जैसी.



“देखो सलीम,” अब्बा ने पूछा, “इसीलिए ऊँट खेत की जुताई का काम नहीं लिया जाता है?”

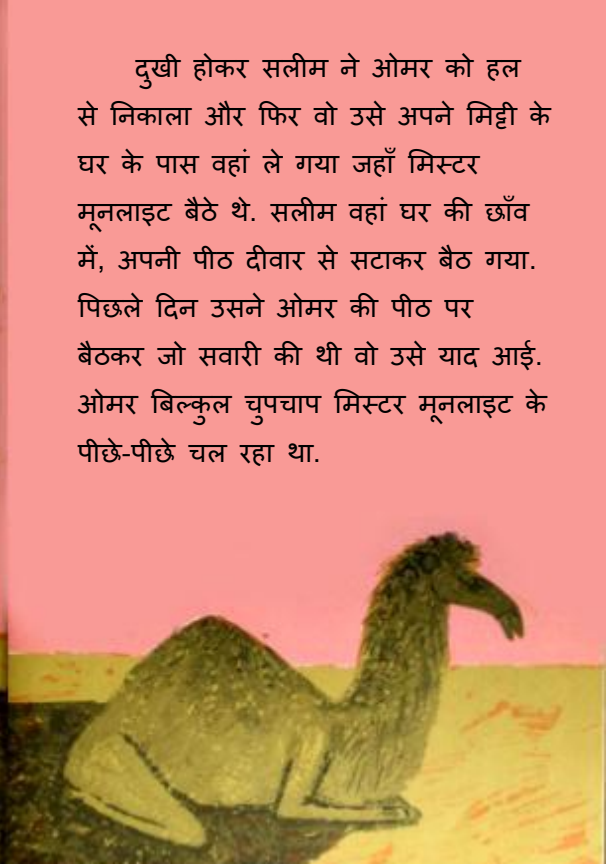
सलीम ने कहा, “ठीक, अब मुझे समझ में आया कि ऊँट से जुताई का काम क्यों नहीं करवाया जाता है. क्योंकि ऊँट हल को एक सीधी लाइन में नहीं खींच सकता है.”

“बिलकुल ठीक,” सलीम के अब्बा ने कहा. “देखो ऊँट, गधे जैसे नहीं चलता है. गधा पहले बाएं-अगले पैर और फिर दाएँ-पिछले पैर को आगे रखता है. फिर दायें-अगले पैर और बाद में बाएं-पिछले पैर को बढ़ाता है. जबकि ऊँट अपने दोनों बाएं पैरों को एक-साथ आगे बढ़ाता है, और फिर दोनों दायें पैरों को. इससे ऊँट तेज़ हवा में बाएं-दाएँ हिलता है. इसलिए ऊँट के लिए सीधी लाइन में चलना मुश्किल होता है.





दुखी होकर सलीम ने ओमर को हल से निकाला और फिर वो उसे अपने मिट्टी के घर के पास वहां ले गया जहाँ मिस्टर मूनलाइट बैठे थे. सलीम वहां घर की छाँव में, अपनी पीठ दीवार से सटाकर बैठ गया. पिछले दिन उसने ओमर की पीठ पर बैठकर जो सवारी की थी वो उसे याद आई. ओमर बिल्कुल चुपचाप मिस्टर मूनलाइट के पीछे-पीछे चल रहा था.





अचानक सलीम तेज़ी से उछला. वो गिरते-गिरते बचा. उसने जल्दी से ओमर की रस्सी एक हाथ में पकड़ी और मिस्टर मूनलाइट की दूसरे हाथ में. फिर वो उन्हें वापिस खेत में लेकर गया. “अब्बा!” सलीम ने ज़ोरदार आवाज़ में बड़े उत्साह से कहा.

“ज़रा, वक़्त का भी ध्यान रखो?” अब्बा ने मुस्कराते हुए कहा. “क्या और जुताई करनी है?”

“हाँ,” सलीम ने कहा. “क्या आप मुझे एक बार और खेत जोतने की इज़ाज़त देंगे? मिस्टर मूनलाइट, ओमर और मैं हम तीनों मिलकर खेत जोतेंगे.”

अब्बा ने देखा कि सलीम उस काम को करने को बहुत उत्सुक था. उन्होंने कहा, “करो बेटा, पर ज़रा जल्दी करना. इससे पहले कि ओमर दुबारा गुस्सा न हो जाए!”



सलीम ने दुबारा ओमर को हल से बाँधा। उसने ओमर के आगे मिस्टर मूनलाइट को एक लम्बी रस्सी से बाँधा। फिर सलीम ने हल के दोनों हैंडल को अपने हाथों से पकड़ा। उसके बाद उसने ऊँट से कहा, “खींचो ओमर! खींचो!” उसने गधे से कहा, “आगे चलो, मिस्टर मूनलाइट, आगे बढ़ो!”

धीरे-धीरे करके पीला गधा और ऊँचा ऊँट एक सीधी लाइन में खेत में आगे बढ़ने लगे। सलीम, हल की नोक को कसकर ज़मीन में दबाए रहा। वो जौ के खेत के दूसरे सिरे पर पहुँचकर वापिस लौटे। हल की नोक से ज़मीन, दो-हिस्सों में बंट गई।



सलीम के अब्बा ने, ज़मीन की इतनी खूबसूरत जुताई को बड़े अचरज से देखा। इस बार की जुताई से बीज बोने के लिए बहुत गहरी नाली बनी थी। खास बात यह थी कि नाली एकदम सीधी लाइन में थी। सलीम के अब्बा बिल्कुल वैसी ही जुताई चाहते थे। उन्होंने इतनी गहरी और सीधी जुताई पहले कभी नहीं देखी थी।

“सलीम!” उन्होंने खुशी से चिल्लाते हुए कहा। “बहुत उम्दा!”

यह सुनकर सलीम वाकई में बहुत खुश हुआ क्योंकि अब से उसके अब्बाजान को कभी भी खुद हल को नहीं खींचना पड़ेगा।

सलीम खुशी से चिल्लाने लगा. जब वो चिल्ला रहा था तब मिस्टर मूनलाइट ने अपनी गीली नाक, सलीम के कंधे से रगड़ी. सलीम ने अपने दोनों हाथ मिस्टर मूनलाइट के गले में डाले और उसे प्यार से पुचकारा. सलीम ने ओमर के कान में भी कुछ कहा, जिससे ओमर बिल्कुल शांत हो गया.

इस अनूठे दृश्य - गधे और ऊँट द्वारा खेत जोतने के अदभुत नज़ारे को, आप आज भी मोरक्को में देख सकते हैं.





